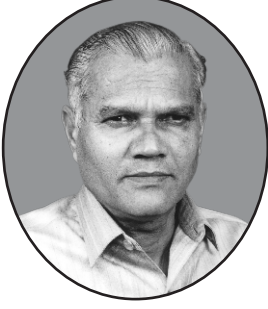


जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैव जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in



६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५१ वे ❖ अंक २ व ३ ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०१९ (संयुक्त अंक)

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● सुवर्ण महोत्सव शुभ संदेश	२३	● सामंजस्य से समस्या का समाधान निकाले ११५
● जैन जागृति : ५० वर्ष अखंड चैतन्य देणारा अंक	४३	● सुखी जीवन की चाबियाँ – आठ दोष अन्तरंग शत्रु-जय : ४ – मद ११९
● जैन जागृति मुळे दीक्षा घेतल	५१	● जैन धर्म – एक स्वतंत्र व प्राचीन धर्म १२५
● दीपावली पूजन विधी	५३	● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १२९
● दीपावली पूजन मुहूर्त	५७	● गौतम पृच्छा – शंका/समाधान १३९
● अनुपम है गुरु गौतम	६७	● जैन समाज जागा हो १४५
● घर में जलाए है दीप हजार, एक दिया जलाओ मनुआ के द्वार	७२	● आशापूर्ती बाई – भाऊसांची १४८
● श्रुत पंचमी – ज्ञान साधना का पर्व	७५	● कभी अलविदा ना कहना १५१
● कडवे प्रवचन	७९	● जागृत विचार १६०
● जैन धर्म व दीपावली	८०	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – औंधे मुँह ना गिर १६१
● अंतिम महागाथा...		● निर्ग्रन्थ वाणी १६४
* ९ : आत्मसाम्राज्य चाहता हूँ	९१	● कुछ भी नहीं चाहिए : सिवा तुम्हारे १६७
* १० : विदेही संन्यासी	९३	● क्या हम कल होंगे? १६८
* ११ : महाभिनिष्क्रमण	९७	● लक्ष्य बनाएँ, पुरुषार्थ जगाएँ १६९
● ऐसा हो समर्पण	१००	● विराट वागरणा १७९
● आत्मध्यान : १ – क्या है ध्यान	१०१	

❖ जैव जागृति ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०१९ (संयुक्त अंक) ❖ १९ ❖

● कडवे बोल	१८८	● श्री. राजेश सांकला, पुणे - पुरस्कार	२११
● हास्य जागृति	१८९	● बन्सीरत्न चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे	२१३
● लग्नापूर्वी व लग्नानंतर	१९१	● श्री. अजितजी सुराणा, मनमाड	२१५
● सभी प्राणियों के कल्याण की भावना रखनेवाला ही धर्मात्मा कहलाता है	१९५	● श्री. कुणाल लुणावत - भारतात १५१ वा	२१७
● किमया तीन रुपाची	१९६	● JITO - JATF	२१९
● साचो ज्ञान : सुखी की पहचान	१९७	● बॅ. वीरचंद गांधी जयंती, पुणे	२२०
● भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक की प्रेरणाएँ	१९९	● उवसग्वहरं स्तोत्र - सामुहिक पठण, पुणे	२२३
● निसर्ग सन्मुख जगण्यातच शाश्वत सुख	२००	● युगल धर्म संघ, पुणे - तीर्थयात्रा	२२४
● दीपावली ज्योती पर्व	२०३	● महावीर फूड बॅक, पुणे	२२५
● देह के पार आत्म तत्व अकेला	२०५	● सौ. मनिषा दुगड, पुणे - पुरस्कार	२२५
● दीपावली दीये का त्यौहार है, धुएँ का नहीं	२०७	● पारस उद्योग समूह, अहमदनगर	२२९
● चारोळ्या	२०९	● भक्तामर रेसीडेन्सी, वडगावशेरी	२३१
		● पटारखों के शोर से क्या फायदा	२३५
		● सुवर्ण पर्वातले सोनेरी पान	२३९
		● श्री. विजयकांतजी कोठारी, पुणे	२४१
		● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००
------------	----------	-------------	----------	---------	---------

या अंकाची किंमत १०० रुपये.

● www.jainjagruti.in

● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वगणां व जाहारात - राख/मानआडर/ड्राफ्ट/ AT PAR चेक/ पुणे चेकन / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA

Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146

IFS Code : SBIN006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Raturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

❖ जैन जागृति ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०१९ (संयुक्त अंक) ❖ २० ❖

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in
Email : jainjagruti1969@gmail.com • Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९, ९४२२८३२८४९
- ❖ पुणे शहर ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ परिसर, पुणे - सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव - श्री. शिरीषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत - मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ कुर्डुवाडी, बार्शी - श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ बीड - श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन:(०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ नाशिक - श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर -श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ अमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ धुळे - श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२६९५४३३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

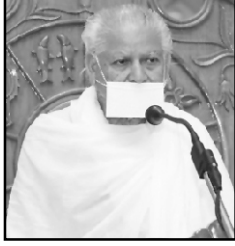
❖ जैन जागृति ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०१९ (संयुक्त अंक) ❖ २१ ❖



जैन जागृति सुवर्ण महोत्सव - शुभसंदेश



आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा.



जैन जागृति, मासिक पत्रिका का 'अर्ध शताब्दी' वर्ष मनाया जा रहा है। जैन दर्शन के त्याग, वैराग्य एवं वीतरागता की गाथाओं को जन साधारण तक सामान्य भाषा में पहुँचाया जा रहा है। विविध लेखकों के द्वारा रचित रचनाओं को एक साथ, एक ही पुस्तिका के माध्यम से, प्रतिमाह परिवार में, हिंदी एवं मराठी भाषा में, संस्कारित करने का पुरुषार्थ पिछले पचास वर्षों से हो रहा है। आपका उत्तम संपादन, पर्युषण, दीपावली आदि विशेषांक पठनीय होते हैं। आपकी उत्तम धर्म प्रभावना एवं संस्कार कार्यक्रम के लिए

हार्दिक साधुवाद।

संस्थापक स्व. कांतिलालजी चोरड़िया एवं श्री संजयजी चोरड़िया श्रीमती सुनंदाजी चोरड़िया को हार्दिक साधुवाद।

आप ऐसे ही धर्म प्रभावना में अपने जीवन के क्षणों का उपयोग करें। यही हार्दिक मंगल भावना।

स्थान : पूना, दिनांक : २४-९-२०१९

आचार्य शिवमुनिजी

आचार्य श्री चन्दनाश्रीजी



आत्मप्रिय संजय, प्रिय सुनन्दा !

सस्नेह धर्मस्वस्ति !

साहित्य प्रेरणास्त्रोत है, ज्ञान का सागर है पुरुषार्थ का प्रबोधक है, आत्मशुद्धि एवं विचारशुद्धि का आत्मीय सहयोगी है। परममित्र है, मार्गदर्शक है। अतीत को जीवित रखनेवाली, भविष्य के स्वप्न सजानेवाला तथा वर्तमान को समर्थ बनानेवाला है साहित्य। अतः भगवान और गुरु के साथ साहित्य भी पूजा गया है। अतः हमारे आचार्यों ने अपनी भावना को शब्दायित किया है -

“शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुति, संगति सर्वदाऽयैः ।”

“श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः, श्रुते भक्तिः सदाऽस्तु मे ।”

हजारों वर्ष पूर्व की प्राचीन परम्परा है हमारी। महामनीषियों ने अपना जीवन श्रुतसाधना को समर्पित कर दिया था। धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला, न्याय-नीति, व्यवसाय आदि कोई विषय ऐसा नहीं है जो उनके तलस्पर्शी मौलिक चिन्तन से अछूता रह गया हो। इसलिए मनुष्य जाति इतनी ज्ञान समृद्ध है। साहित्य स्रष्टा तो अपनी साधना में गहरे उतरे हैं, निमग्न रहे हैं। प्रकाशक है धन्यभागी कि जिन्होंने मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप उस अमृतनिधि को प्रकाश में लाया है।

प्रकाशकों की रत्नमाला के आप भी बहुमूल्य रत्न हो, अभिनन्दन है आपका और आपकी श्रुत सेवाओं का मैं जानती हूँ यह आसान नहीं है, कि प्रतिमाह ५० वर्ष से आप “जैन जागृति” पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं और ‘जैन

जागृति' के माध्यम से जागरण का कार्य कर रहे हैं। आपकी साधना की फलश्रुति है कि यह यशस्वी यात्रा सम्पन्न हुई है। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है - "सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय" आपके प्रकाशन ने प्रसिध्दी पाई है। आपने सभी प्रकार के जिज्ञासुओं की भावना को सम्मान देते हुए जिज्ञासा का समाधान करनेवाली सामग्री, प्रकाशन की सुन्दरता के साथ उन तक पहुँचाई है।

वीरायतन एक नयी दृष्टि एक नया विचार है। फिर भी स्व. श्री. कांतीलालजीने और तदनन्तर आप दोनों ने बहुत ही प्रेम एवं सम्मान के साथ राष्ट्रसंत पूज्य गुरुदेव उपाध्याय अमरमुनिजी महाराज के ज्ञान गर्भित विचारों को मेरे लेखों को तथा वीरायतन योजना एवं जनहित में सम्पन्न कार्यों की जानकारी समय-समय पर स्वप्रेरणा से प्रकाशित किया है।

जन चेतना के जागरण की दिशा में आप प्रयत्नशील रहे। उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त हो। मेरे आशीर्वाद सदैव आपके साथ है।

आचार्य चन्दना, विरायतन



युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

पत्रकारिता तथा प्रकाशन समाज के उत्कर्ष के माध्यम है। समाज की प्रगति के द्योतक हैं। तथापि पत्रकारिता में समाज के साथ जुड़कर के सकारात्मक विचारधारा के साथ काम करना आज के युग में चुनौती बन गया है। अपने प्रकाशन की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार की नकारात्मक बातों को प्रचारित करने आदि जैसे हथकंडे अपनाये जाते हैं। इनसे दूर रहकर आपने पत्रिका के माध्यम से समाज के संगठन, उत्कर्ष को लक्ष्य में रखकर सामग्री का प्रकाशन यह एक कठिनतम कार्य है। इस सन्दर्भ में "जैन जागृति" ने एक आदर्श मानदंड स्थापित किया है। विगत पचास वर्षों से निरन्तर अपनी पत्रिका के विशेष उच्च स्तर को बनाये रखा है। यह वरिष्ठ पत्रकार, सुश्रावक श्री. कांतीलालजी चोरडिया के सूझबूझ तथा सैद्धान्तिक अधिष्ठान का सुपरिणाम है। श्री. संजयजी और उनकी सहधर्मिणी सौ. सुनंदाजी इस पत्रकारिता रूप समाज सेवा की विरासत को समर्थरूप से आगे बढ़ा रहे हैं। आज के डिजिटल मिडिया के विस्तारशील युग में प्रिंट मिडिया को भी समाज के अधिकतम परिवारों तक पहुँचाने के लिए आप संकल्पबद्ध है। साथ ही सही समय पर, निर्धारित तिथि पर अंक (पत्रिका) प्रकाशित करके उसे डाक में भेज देना यह एक विशिष्ट पहचान "जैन जागृति" ने बनाई है।

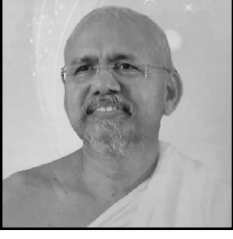
"जैन जागृति" नाम को आपने सार्थक बनाया है जैनत्व को केन्द्र में रखकर। जैन विधि हो, जैन इतिहास हो, जैन तीर्थ हो या जैन परिवार की विशेष घटना, उपलब्धि हो जैन जागृति ने उसी को हमेशा प्राथमिकता दी है। विज्ञापनों में भी एक स्तर का सदैव ध्यान रखा है। ऐसे अनेक विशेषताओं से युक्त जैन जागृति के अर्धशताब्दी के अवसर पर हार्दिक बधाई। आपका यह उपक्रम भविष्य में अधिकाधिक समाज सेवा में सफल बनें यही मंगल कामना।

पूना,

महाराष्ट्र, २१-०९-२०१९

'महेन्द्रऋषि'

युवाचार्य, श्रमण संघ



आचार्य श्री रत्नसेनसुरिश्वरजी म. सा.

धर्मानुरागी संजयभाई । हार्दिक धर्मलाभ !

देव-गुरु कृपा से आनंद है । 'जैन जागृति' प्रतिमास मिलता है । श्वे. जैन संघ में कई हिन्दी मासिक, साप्ताहिक निकलते हैं । परंतु कइयों में तो सिर्फ सामाजिक समाचारों की ही बहुलता होती है। उनमें धार्मिकता नहीं होती है जब कि जैन-जागृति में प्रतिमास वैराग्य प्रेरक धार्मिक अध्यात्मिक व संस्कार पोषक लेख भी होते हैं जो समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में खूब सहायक बनते हैं ।

जैन जागृति मासिक अपने प्रकाशन के ५० वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है यह बहुत आनंददायी घटना है।

आपका मासिक प्रगतिके पथ पर खूब आगे बढ़े और समाज को सही दिशा बताने में सक्षम बने इसी शुभ कामना के साथ

- आचार्य रत्नसेनसुरिश्वरजी म.सा.



आचार्य श्री महाबोधी सूरिश्वरजी म.सा.

सुश्रावक संजयभाई चोरडिया, धर्मलाभ !

परमात्मा की कृपा से हम सभी सुखसाता में हैं ।

जैनजागृति अंक सुवर्ण वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह खुशी की बात है ।

मोबाईल, वॉट्सअप, फेसबुक, इन्टरनेट, यु ट्यूब जैसे सोशल मिडिया के इस जमाने में बहुत सारे मेगज़िन, पत्रिका बंद होने जा रही हैं, या ऑक्सिजन पे चलती हैं, तब भी जैन जागृति प्रतिमास भरपुर सामग्री के साथ प्रकाशित होता है, यह अपने आपमें बड़ी बात है ।

एकवीसवीं सदी भोग/सुख/विलास की है । ऐसे समय में धर्म, संस्कार एवं वैराग्य के लेखोंसे जैन जागृति अंक आनेवाले समय में और समृद्ध बने यही मंगल कामना ।

महाबोधीसूरी के धर्मलाभ

प्रवर्तक श्री प्रकाशचन्दजी म.सा.

श्रीमान संजयजी चोरडिया (संपादक - जैन जागृति, पूना)

'जैन जागृति' मासिक पत्रिका का यह वर्ष (२०१९) स्वर्ण जयन्ति वर्ष में गतिमान है । किसी पत्रिका का निराबाध ५० वर्ष निरन्तरता से पूर्ण होना, अपने आप में अभिनंदनीय है । पत्रिका की ५० वर्षीय संपूर्ति आपके पिताश्री एवं आपकी कुशल प्रबंधन एवं सम्पादन की विशिष्ट फलश्रुति है । आपकी तीव्र लगनशीलता एवं समर्पणता द्वारा पाठकवर्ग इस पत्रिका से बंधा रहा और निरन्तर पाठकवर्ग जुड़ता जा रहा है।

पत्रिका में सभी प्रकार के लेख यथा धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, गृहसंसारिक आदि प्रकाशित होते हैं । जिसके कारण सभी प्रकार के रुचिवाले पाठक इस पत्रिका को अपनी पत्रिका मानते हैं । यही आपकी जैन जागृति की विशेषता है ।

'साहित्य व समाज सदा जागृत रहे' आपकी यह विशिष्ट विचारधारा निरन्तर गतिशील रहे यही सद्भावना । जैन जागृति भविष्य में भी शताब्दी वर्षोतक पाठक वर्ग को अध्ययनादि में सहयोगी बनी रहे यह मंगलभावना।

मुनि प्रकाशचन्द 'निर्भय' (श्रमण संघीय प्रवर्तक) पूना चातुर्मास



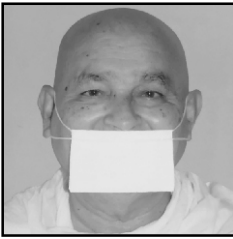
प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

श्री. संजयजी चोरडिया सौ. सुनंदा चोरडिया सादर धर्म संदेश.
यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि स्व. श्री. कांतीलालजी सा चोरडिया द्वारा स्थापित 'जैन जागृति' पत्रिका अपने ५० वर्ष पूरे करने जा रही है। पत्रिका द्वारा महाराष्ट्र एवं संपूर्ण जैन समाज में रचनात्मक कार्यों का संदेश देते हुए धर्म एवं संस्कारों के बीजारोपण हेतु एक सेतु का कार्य किया है। जिससे समाज में एक नव चेतना का संचार हुआ है। ५० वर्षों से निरंतर - निर्बाध रूप से पत्रिका का संचालन एवं प्रकाशन समाज को प्रबोधन देते हुए स्व. श्री. कांतीलालजी सा एवम् चोरडिया परिवार की समाज को यह एक महत्वपूर्ण देन एवं उपलब्धि है। उनका गहन अनुभव, चिंतन तथा वास्तविकता के साथ तथ्यों की गुणवत्ता से परिपूर्ण यह पत्रिका सम्पूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित कर रही है।

मुझे ज्ञात है कि जब महाराष्ट्र से कोई जैन पत्रिका का प्रकाशन नहीं होता था ऐसे समय जब संसाधनों की भी कमी हुआ करती थी उस समय लगाए गए इस छोटे पौधे ने आज ५० वर्षों में विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है। वर्तमान में महाराष्ट्र में जैन समाज में शायद ही ऐसा कोई परिवार हो जहाँ जैन जागृति नहीं जाती हो, यह कहने में कोई अतिशयोक्ती नहीं होगी कि जैन जागृति के बिना हर जैन परिवार अधूरा सा है। लोगों को बड़ी उत्सुकता से इस पत्रिका का इंतजार रहता है।

निरंतर ५० वर्षों से प्रकाशित जैन जागृति ने सम्प्रदाय से परे संगठनात्मक स्वरूप का संदेश देते हुए जैन धर्म के संदेशों को जन-जन तक प्रचारित करने का कार्य किया है। मैं आपके इन कार्यों की प्रशंसा एवं अनुमोदना करता हूँ। साथ ही आशा करता हूँ कि जैन जागृति जन-जन की जागृति बने, जिनशासन की प्रभावना में अभिवृद्धि करे। आप निरंतर भविष्य में भी नए आयाम स्थापित करते जाए तथा जन-जन में धर्म चेतना और सुसंस्कारों की जागृति लाने में उपयोगी सिद्ध हो। यही हार्दिक मंगल कामना...

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी



महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री. कुंदनऋषिजी म.सा

जैन जागृति पत्रिका ५० वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है। श्री. कांतीलालजी चोरडिया आचार्य भगवंत पू गुरुदेव श्री आनंदऋषिजी म.सा. की सेवा में आए थे। साथ में चंद्रभानजी डाकलिया भी थे। उस समय "जैन जागृति" प्रकाशन के लिये उन्होंने गुरुदेव से आशीर्वाद माँगा था कि, मराठी भाषा में हमारे समाज की कोई पत्रिका नहीं है। मैं शिक्षक की नोकरी छोड़कर इस पत्रिका का प्रकाशन करना चाहता हूँ। आचार्य भगवंत ने कहा - पत्रिका निकाल रहे हो, अच्छा है किन्तु इसके लिए श्रम लेना पड़ेगा। एक बार प्रारंभ की है, तो उसे चलाने के लिए अच्छा प्रयास करो। इसमें किसी का खंडन-मंडन न हो। किसी की बुराई, कमी को मत निकालना।

जैन जागृति का ५० वें वर्ष में पदार्पण के लिए हार्दिक मंगल कामना। यह मासिक अबाल वृद्ध के लिए प्रेरणादायक बने। इसकी कीर्ति चारों ओर फैलें, ऐसी हमारी ओरसे मंगल कामना।

प्रवर्तक : कुंदनऋषिजी म.सा.



प.पू. उपाध्याय डॉ. विशाल मुनिजी म.सा.

जैन जागृति की पचासवीं स्वर्णजयंती के पावन प्रसंग पर, जैन जागृति परिवार के प्रत्येक सदस्य को हार्दिक हार्दिक बधाइयाँ एवं मंगलकामनायें हैं।

किसीभी व्यक्ति या वस्तुका, सफल एवं सार्थक ५० वर्ष व्यतीत हो जाना अविस्मरणीय ऐतिहासिक प्रसंग हो जाता है। सो जैन जागृति मासिक ने अपना स्वर्णिम इतिहास स्थापित कर लिया है, यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है।

५० वर्ष पूर्व कर्मठ, सुश्रावक समाजहित चिंतक, श्रीमान कांतिलालजी चोरडिया ने जैन जागृति पत्रिका को समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी कर्मठता एवं कर्तव्य के कारण मासिक पत्रिका की समाज सेवा यात्रा अबाध गति से चलती रही कि अब उसकी ५० वीं वर्षगांठ सम्पन्न हो रही है। श्रीमान संजय चोरडिया तथा सौ. सुनंदा चोरडिया ने पूज्य पिताश्रीजी के करकमलों द्वारा संचलित जैन जागृति को इस कदर अपनापन दिया की बड़ी ही सफलता के साथ मासिक पत्रिका की विकास यात्रा उत्तरोत्तर शिखर की ओर आगे बढ़ती गयी। आज इस पत्रिका की लोकप्रियता से पूरा जैन समाज गौरवान्वित हो रहा है।

इस मौके पर सागर चोरडिया एवं सौ. प्राचि चोरडिया को बधाइयाँ एवं मंगलकामनायें देना अति आवश्यक है कि जिन होनहार बच्चों ने अपनी अद्भूत प्रतिभा से अपने माँ, बाप, दादा दादी सबको नयी पहचान दी है एवं पूरे जैन समाज के गौरव को अपनी विशेष प्रतिभा से चार चाँद लगाया है।

शुभाकांक्षी डॉ. विशाल मुनि



प्रबुध्द विचारक पू. श्री आदर्शक्रषिजी म.सा

॥ अर्हम् ॥

श्रद्धाशील, श्री. संजयजी

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था, 'साहित्य वह है, जिसे चरस खींचता हुआ किसान भी समझ सके और खूब पढ़ा लिखा इंसान भी।'

'जैन जागृति' मासिक पत्रिका को मैं इस रूप में देखता हूँ। जैन पत्रिकाओं की परंपरा में यह सबसे पहली पत्रिका है। इसने शुरुआत से जन जागरण का अच्छा कार्य किया। प्रसिध्द विचारक एवं लेखकों के विचारों से सामान्य जनमानस का परिचय कराया।

मुझे स्मरण होता है, आपके पिताजी श्री. कांतिलालजी का जिन्होंने इस क्षेत्र में कदम रखकर आपको यह विरासत दी है। आप भी इस विरासत को आगे बढ़ाने का भरसक प्रयास कर रहे हो।

वर्तमान में तो जैन जागृति समाज की बहुप्रिय पत्रिका है। इसमें आगम-वाणी, संत-वाणी, सुविख्यात वक्ता, विचारकों के साथ युवा-महिला आदि सबके विचारों को स्थान दिया है। जैन समाज के बच्चों, युवा, कन्याएँ आदि जिन-जिन क्षेत्रों में श्रेष्ठता हासिल करते हैं, उनका अभिनंदन करके आप उनके लिए प्रोत्साहन का कार्य करते हैं। इससे उनका, परिवार का तथा समाज एवं धर्म का गौरव बढ़ता है।

हल्के-फुल्के चुटकुलों से लेकर कविताएँ, गीत, कहानियाँ, प्रवचन, धारावाहिक, समाज की समस्याएँ एवं

उपलब्धियाँ ऐसे विविधताओं से सुसज्जित 'जैन जागृति' का स्वागत समाज के हर स्तर पर होता हुआ दिखाई देता है । इसकी माँग निरंतर बढ़ती जा रही है ।

यह वर्ष पत्रिका का स्वर्णिम वर्ष है । इतने लंबे समय तक आपने पाठकों को अच्छा पाठ्य प्रदान किया है, तभी पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है । आपके इस सफलता पर आप का अभिनंदन करते हुए आगामी क्षणों के लिए मंगल कामना करते हैं ।

- आदर्शऋषि

प.पू. श्री किरणप्रभाजी म.सा.

धर्मस्नेही, सततोत्साही, श्री. संजुभाऊ !

अत्र विराजीता, आत्मलक्ष्मी, साध्वीरत्ना पू. श्री. किरणप्रभाजी म.सा. एवं समस्त साध्वी समुह की ओरसे सस्नेह धर्म सन्देश सह हार्दिक बधाई !

'जैन जागृति' अर्थात इन्सान की दुनिया में आगमन से लेकर विदाई तक, जिंदगी के हर मोड से जुडकर सभी से आत्मिय अनुबंध तैयार करनेवाली एक सर्वप्रिय मासिक पत्रिका ।

हमें अच्छी तरह याद है, शुरुआती दौर में इसमें 'स्वर्ग-नरक' के रूप में एक ही परिस्थिति में अलग-अलग मनःस्थिति से होनेवाले जीवन निर्माण के सूत्र दिख जाते थे जो उसका दिलचस्प अंश था ।

अपनी आगे बढ़ती हुई दीर्घयात्रा में कई रूपों में ढलती हुई यह पत्रिका अब अपनी विकास यात्रा के बड़े सुन्दर मोडपर है, जहाँ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, मानसिक, व्यावहारिक आदि विविध आयाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं और उम्र के हर पडाव पर रहा हुआ व्यक्ति उसके पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहा है ।

पत्रिका के इस स्वर्णिम युग में आपका अभिनंदन करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है कि श्री. कांतीलालजी को अपनी वैचारिक विरासत को आगे बढ़ानेवाले सुपुत्र प्राप्त हुए, आपके रूप में उन्हें विचारों और भावनाओं को संजोने और प्रगति करानेवाले सुपुत्र मिले हैं ।

हम मंगलकामना करते हैं कि आपकी यह धारा अखंड रूप से आगे प्रवाहित होती रहे । समाज का विश्वास और प्रेम आपको सदा मिलता रहे ।

पू. श्री. किरणप्रभाजी म. की आज्ञासे



श्रमण संघीय सलाहकार श्री रमणीकमुनिजी म.सा.

स्नेहिल श्रावक संजय चोरड़िया तथा श्राविका सुनंदाजी चोरड़िया !

हार्दिक स्नेहयुक्त धर्मध्यान !

सबसे पहले मैं आपके सौभाग्य की सराहना करता हूँ जिसकी वजह से अतिश्रेष्ठ 'जैन कुल' मिला। जैन कुल में भी आपको स्व. कांतीलालजी चोरड़िया तथा स्व. चंचलबाई चोरड़िया का 'गृहांगन' मिला । जिसकी बदौलत आपको सुन्दर संस्कार, आत्मीय व्यवहार तथा साहित्य-सृजन की अद्भुत विरासत मिली । जिसका नाम है 'जैन-जागृति' मासिक पत्रिका !

इस पत्रिका के माध्यम से लगातार पिछले ५० पचास वर्षों से, पहले आपके पिताश्रीजी ने तथा अब आप दोनों पति-पत्नी 'जिन-शासन' की जो महती प्रभावना कर रहे हैं । इसके लिए 'जैन-जागृति' मिशन से जुड़ी हर धड़कनों

को 'अनुमोदना' देता हूँ।

१५ अगस्त १९६९, स्वतंत्रता दिवस (राष्ट्रीय पर्व) की पावन बेला में 'जैन-जागृति' के रूपमें जो 'आत्म-जागरण' साधार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तथा जिसे 'गोल्डन-ज्युबिली' (स्वर्ण जयन्ती) के रूप में सन २०१९ में मनाया जा रहा है। इस सत्पुरुषार्थ के लिए 'चोरडिया-परिवार' को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ बधाई देता हूँ।

'जैन-जागृति' के प्रकाशक तथा हजारों 'पाठकों' की 'निरन्तरता तथा आपकी 'ज्ञानार्जना' को साधुवाद देता हूँ। 'जैन-जागृति' की 'पाठ्य-सामग्री' सदैव ज्ञानवर्धक व प्रेरणास्पद होने की वजह से 'लोकप्रियता' के नये आयाम को छू रही है ! अगले पचास वर्षों में पत्रिका मनचाही प्रगति के साथ 'शताब्दी-वर्ष' में प्रवेश करे ऐसी हार्दिक मंगलकामना करता हूँ।

आपका
रमणीक मुनि (सलाहकार) श्रमण संघ,
चातुर्मास - वडगाँव शेरी, पुणे

वाणीभूषण संस्कारभारती श्री. प्रीतिसुधाजी म.सा.



जैन जागृति हे माझे आवडते मासिक आहे. १९६९ पासून या मासिकाशी माझे भावनिक संबंध जुळलेले आहेत. श्रीमान कांतीलालजी चोरडियांनी जैन इतिहासातील मौलिक कथांचा सुबक मराठी अनुवाद करून छापायला सुरूवात केली. तो काळ आठवला की, खूप बरे वाटते.

जैन समाजातील सर्व घडामोडी हातात मासिक घेतल्यानंतर पटकन समजतात. हा विरंगुळा खरोखर आनंददायी असतो. कांतीलालजी चोरडिया यांनी या मासिकाची पायाभरणी इतकी व्यवस्थित केली आहे की, आजतागायत ते मासिक जसेच्या तसे ताजे वाटते. आणि याचे श्रेय चि. संजयकुमार चोरडिया यांस आहे. वडिलांची परंपरा जोपासण्याचे कष्टसाध्य काम चि. संजय अत्याधिक उल्हासित होऊन जेव्हा करतो तेव्हा उत्स्फूर्तपणे म्हणावेसे वाटते की, 'सुपुत्र असावा तर असा' हे मासिक ज्या ज्या जैनांच्या घरी जात नसेल ते जैन कुठेतरी अधुरेपणाचा अनुभव घेत असतील. या मासिकाची अंक संख्या भरपूर वाढावी. याचे लालित्य, साहित्य रसपूर्ण प्रवाही व प्रासादिक असावे हेच आशिर्वाद प्रेषित करित आहे.

साध्वी प्रीतिसुधाजी

साध्वी डॉ. प्रतिभाश्रीजी म.सा.

स्वर्ण जयंती समारोह एक प्रकार का ब्रेकिंग सेलिब्रेशन माना जा सकता है। यहाँ पर रुककर, खड़े होकर, पीछे मुड़कर देखा जा सकता है तथा अपनी उपलब्धियों पर गर्व किया जा सकता है। आनेवाले कल को कल को देखने के लिए नई ऊर्जा, नये सपने, नई सोच के साथ चलने की कल्पना की जा सकती है। इसमें जोश व उत्साह को रिफिल करने की बात की जा सकती है। सेकंड, मिनट, घंटों, दिनों, वर्षों और दर्शकों के साथ बहुत कुछ परिवर्तित हो जाता है। अदृश्य समय के ऊपर अपना निशान छोड़कर मील के पत्थर के रूप में इन पलों को रास्ते में ठोककर

ऐतिहासिक यादगार बनाता जाता है। जीवन को रंगो से भरकर उसे एक पर्व में परिवर्तित कर देता है। जाति धर्म संप्रदाय अर्थ सब मौन हो जाता है। भूतकाल को, पृष्ठभूमि से उठाकर वर्तमान को सामने लाकर खड़ा करने में कामयाबी हासिल करता है।

ऐसा ही मासिक है “जैन जागृति”। जब हम बहुत छोटे थे तब बेंगलोर में सांसारिक पिताश्री बंसीलालजी धोका (चर्होलीवाले) जैन जागृति में छपा हुआ भजन पढ़कर गुनगुनाते थे। त्रिशला मातेचा उदीर आला... जो जो रे बाळा जो। आज भी हमें यह गीत भावनात्मक आवेगों से भर देता है। सचमुच आज देखते ही देखते “जैन जागृति” मासिक अपनी यात्रा के ५० वर्ष का पड़ाव पार कर चुका है।

श्रीमान स्व. कांतिलालजी संजयजी सुनंदाजी चोरडिया परिवार की तहदिल से धन्यवाद। अभिनंदन। हर्ष हर्ष। जय-जय है। उन्होंने बखूबी जैन जागृति को जन जागृति बनाकर लोगों को जागरूक किया है। आगे भी यह जन जागृति का बिगुल बजाती जाएँ। इन्ही भावों सह, शुभाकांक्षिणी,
स्थान : बारामती, पुणे।

साध्वी डॉ. प्रतिभा श्री प्राची

गिरीश बापट
संसद सदस्य
(लोकसभा)



१४४, कसबा पेठ, कसबा गणपती
समोर, पुणे ४११ ०११.
फोन : ०२०-२४५७४५५४, २४५७४५५५

शुभसंदेश

जैन जागृति गत ५० वर्ष से नियमित रूपसे प्रकाशित होनेवाले मासिक सुवर्ण महोत्सव अंक प्रकाशित करने जा रहे है यह सुनकर बहुत खुशी हो रही है।

महाराष्ट्र में शहर तथा छोटे बड़े गाँव के जैन समाज के लोगों के पास ये मासिक पहुँचता है, इस मासिक में धार्मिक, सामाजिक, व्यापारी, आरोग्य एवं गृहउपयोगी लेख प्रकाशित किए जाते है।

जैन समाज के सब संप्रदाय की बडी न्यूज एवं सुसंस्कार व सदाचार का पुरस्कार करनेवाला साहित्य इसमें प्रकाशित किया जाता है।

जैन जागृति मासिक सुवर्ण महोत्सव अंक के लिए मैं शुभाशिर्वाद देता हूँ और आप समाज के प्रती जो काम कर रहे है उसके लिए बधाई देता हूँ ! आपका स्नेह वृद्धिगीत होवो !

आपका स्नेहांकित, गिरीश बापट

आपका “जैनजागृति” मासिक जो व्यक्ती नियमीत पढता है उसके जीवनमें पॉझीटीव्ह विचारसरणी से अच्छा परिवर्तन आ सकता है। इस सामाजिक परिवर्तन में आपका योगदान महत्वपूर्ण है।

आपके मासिक के सफल घोडदौड के लिए आपको शुभेच्छा और अभिनंदन।

आपका शुभेच्छुक
प्रेषक - अशोक चांदमलजी गांधी, पाथर्डि

जैन धर्माच्या जागृतीचा अनुबंध



गेल्या ३०-३५ वर्षांपासून “जैन जागृती” या मासिकाशी आणि मासिकाचे संपादक संजय चोरडिया यांच्याशी माझे ऋणानुबंध अबाधित आहे. अंकाचे वैशिष्ट्य आणि त्याचे साहित्य मूल्य या दोन्ही गोष्टी जैन धर्माच्या मूलतत्वांशी निगडीत आहे. “जैन जागृती” चे संस्थापक आणि संपादक कांतिलालजी चोरडिया यांनी या अंकाची सुरुवात केली. मात्र, या अंकाच्या मूळ स्वरूपासह नावीन्य जपत आजच्या संपादकांनी संजय चोरडिया यांनी केलेले बदल उल्लेखनीय आहे. आजच्या काळात एखाद्या मासिकाची सातत्यता, अलौकिकता आणि धर्माचे सत्व जपणारे मासिक अभावानेच पाहायला मिळत असते. खरे तर प्रिंट मीडियात पाय रोवून उभे राहणे हेच आजच्या काळात एक व्यावसायिक आव्हान आहे; पण “जैन जागृती” ने हे शिवधनुष्य लिलया पेलले आहे आणि पन्नास वर्षांची अखंड परंपरा जपली आहे. अंकाच्या पहिल्या पानापासून म्हणजे कव्हरपासूनच एक वेगळेपण दिसून येते. जैन धर्मातील विशेष घडामोडींचा आढावाच या कव्हरमधून प्रतित होत जातो. याबरोबरच अंकातील लेख, सकल जैन समाजाला एकत्र आणून त्या दृष्टीने या अंकातील लेखकांचे महत्त्व, महिलांना लेखनासाठी मिळालेले पुरस्कार यांची दखल अंकात आवर्जून घेतली जाते. एखाद्या व्यक्तीच्या निधनाची बातमी छापताना देखील त्या दुःखित जैन कुटुंबाच्या दुःखात सामील होण्याची बांधिलकी देखील बातमीरूपाने अंकात जपलेली असते. जैन धर्मातील पर्युषण पर्व, महावीर जयंती आणि दिवाळी अंक हे “जैन जागृती”चे वेगळेपण आहे. पर्युषण पर्वाच्या अंकात तर पुण्यात चातुर्मासानिमित्त येणाऱ्या मुनिश्रींच्या आगमनाची, त्यांच्या प्रवचनांची आणि त्यांच्या विविध उपक्रमांची दखल घेतली जाते. याच अंकापासून दिवाळीच्या आगमनाची देखील आपल्याला अंकातून जाणीव होते. जैन धर्मशास्त्राप्रमाणे दिवाळी पूजनविधी हे अंकाचे खास वैशिष्ट्य आहे. सर्व जैन बांधवांपर्यंत दिवाळी पूजेची सवित्सर माहिती मंत्रांसह आणि पूजा मांडणीपासून दिलेली असते. आणि हे अंकाचे वैशिष्ट्य सुरुवातीपासूनचे असल्याने या अंकाची अलौकिकता संपूर्णतः वाखाणण्यासारखीच आहे. जैन धर्म, जैन धर्माचे संस्कार आणि ते समाजबांधवामध्ये रुजवण्यासाठी संपादक संजय चोरडिया आणि त्यांच्या पत्नी सुनंदा चोरडिया या अंकाच्या माध्यमातून करीत आहेत आणि पन्नास वर्षांचा हा सुवर्णमहोत्सव याच यशाचे साफल्य आहे. इतकेच नाहीतर आज अमेरिकेत स्थायिक असलेले संजय चोरडिया यांचे चिरंजीव सागर आणि सून प्राची यांचे देखील सहकार्य महत्त्वाचे ठरले आहे. परदेशात देखील “जैन जागृती”च्या माध्यमातून जैन धर्माच्या प्रचाराचे आणि प्रसाराचे त्यांचे कार्य अतुलनीय आहे. आज पन्नास वर्षांच्या या कार्याचा ‘सुवर्ण लेख’ जैन धर्माच्या जागृतीचा अनुबंध आहे. आणि हा अनुबंध हीरकमहोत्सवाकडे यशस्वी वाटचाल करणार आहे, याच्या खात्रीसह संजय चोरडिया आणि सौ. सुनंदा चोरडिया यांना शुभेच्छा देत आहे.

प्रवीण चोरबेले

नगरसेवक, पुणे मनपा, मो. ९८२२०१८६६९

समाज जागृती करणारे – जैन जागृति

सस्नेह जय जिनेंद्र

नियमितता पालन हे खास वैशिष्ट्य असणाऱ्या जैन जागृति मासिकाचा मी अनेक वर्षांपासून वाचक आणि चाहता आहे. जैन समाजातील सर्व पथांच्या, सर्व स्तराच्या लोकांकडून नियमित वाचले जाणारे मासिक म्हणजे जैन जागृति.

जैन समाजास हवी असलेली माहितीची, जागृतीची गरज ध्यानात घेऊन स्व. कांतीलालजी चोरडिया यांनी सुरु केलेले आणि त्यांच्या मागे सुपुत्र श्री. संजयजी आणि सौ. सुनंदाजी चोरडिया यशस्वीपणे चालवित असलेले हे मासिक समाजाचे, कुटुंबाचे एक घटक बनले आहे. या मासिकाची महाराष्ट्र आणि महाराष्ट्रा बाहेर आवर्जून वाट पाहिली जाते. माझ्या नजरेत आणि नित्य वाचनात सर्वात प्रथम आलेले जैन मासिक म्हणजे 'जैन जागृति होय. लिहिण्यासाठी प्रोत्साहित करण्याच्या संपादकांच्या वृत्तीमुळे या मासिकातून अनेक प्रौढ, युवक लिहित आले आहेत. आपले मत, विचार मांडण्याकरिता एक चांगले व्यासपीठ उपलब्ध झालेले आहे.

जैन धर्म, समाज यांच्यावर होणाऱ्या चुकीच्या टीका, चुकीची माहिती यास प्रतिबंध करण्याचे काम एकटे करण्यापेक्षा संघटितपणे करावे असे श्री. संजयजी यांनी सुचविले आणि त्यातूनच २००४ मध्ये 'अरिहंत जागृती मंच'ची स्थापना झाली.

जैन समाजातील सर्व पंथांना समान न्याय, कोणावरही वैयक्तिक टीका नाही, हे 'जैन जागृति'चे खास वैशिष्ट्य राहिले आहे. जैन समाजातील माहिती, बातम्या तसेच निरनिराळ्या विषयावरचे लेख, साधू-संतांचे विचार, मार्गदर्शन देणारे उद्बोधक लेख असे सर्वांगीन वाचनीय लिखाण हे जैन जागृतिचे वैशिष्ट्य आहे. समाजाच्या ज्ञानाचे, हिताचे काही असेल तर स्वतः लक्ष देऊन जाणकारांकडून माहिती घेऊन अंकात छापणे हेही काम संपादकांकडून केले जाते. सर्व जैनांनी धर्मच्या कॉलममध्ये जैन लिहावे असे आवाहन जैन जागृति मासिकाच्या प्रत्येक अंकात असते.

जैन जागृति मासिकाच्या पन्नासाव्या वर्षातील पर्दापणानिमित्त हार्दिक शुभेच्छा !

प्रेषक : राजेंद्र सुराणा, पुणे, मोबा. : ९३७१०२३१६९

मा. संजयजी व सुनंदाभाभी सस्नेह जयजिनेंद्र,

जैन जागृति या मासिकाने अर्धशतक पूर्ण केले त्याबद्दल शतशः धन्यवाद.

अंधारातून प्रकाशाकडे साफल्यतातून समाधानाकडे जाण्याचा संदेश देणारे, "न भुतो न भविष्यती" असे हे जैन जागृति मासिक.

आज समाजामध्ये सर्वात जास्त पंसतीस व जास्त विक्री होणारी पुस्तिका म्हणजे जैन जागृति आपल्या अनेक धार्मिक लेखनामुळे कथामुळे जैन धर्माची सुक्ष्म माहिती मिळते.

जैन जागृति मधील जैन पद्धतीने केलेले दिपावली पुजन हे प्रत्येक घराघरामधून होत असून खऱ्या अर्थाने महावीर स्वामी निर्वाण दिन अगदी लहानापासून मोठ्यापर्यंत सर्वांनाच समजतो. नावातच जागृतिचे व प्रबोधनाचे मोलाचे काम करणाऱ्या प्रत्येक वेळी मला मिळणाऱ्या पुरस्काराचे कौतुक सोहळे सादर करणाऱ्या आपल्या जैन लाडक्या मासिकास पुढिल वाटचालीस हार्दिक हार्दिक शुभेच्छा!

प्रेषक : सुनिता राजेंद्र देसर्डा, अध्यक्ष : पिंपरी चिंचड स्वानंद संस्था,
अहमं गर्भ संस्कार साधना शिक्षिका, मो. ९९६०८८७४७७

‘जैन जागृति’ : ५० वर्षे अखंड चैतन्य देणारा अंक

लेखिका - साईमिलन, पुणे



जैन जागृतिचे संस्थापक
स्व. श्री. कांतिलालजी फुलचंदजी चोरडिया



संपादक व प्रकाशक
संजय चोरडिया



सौ. सुनंदा चोरडिया

विद्यां ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्म ततः सुखम् ॥
अर्थात्, ज्ञान विनम्रता प्रदान करते, विनम्रतेने योग्यता येते, योग्यतेने धनप्राप्ती होते आणि धर्मकार्याशी जोडली जाते, सुखी होते... हा श्लोक इथे लिहावासा वाटला कारण आजच्या या लेखाशी... ‘जैन जागृति’च्या ५० वर्षांच्या परंपरेशी तो तंतोतंत लागू होत आहे.

‘जैन जागृति’चे संपादक संजय चोरडिया आणि त्यांच्या पत्नी सौ. सुनंदा चोरडिया या दाम्पत्यांच्या दृष्टीने हा श्लोक म्हणजे त्यांच्या कार्यकर्तृत्वाचे यथार्थ जीवन आहे. संजय चोरडिया यांच्या वडिलांनी १५ ऑगस्ट १९६९ ला ‘जैन जागृति’ या मासिकाचे रोपटे लावले. अंकाच्या माध्यमातून जैन समाजाशी त्यांची नाळ जोडली गेली. अनेकविध विषय या अंकाचे वैशिष्ट्य ठरले आणि आज या अंकाचा सुवर्ण महोत्सव साजरा होत आहे. अर्थात अंकाच्या प्रकाशनाला ५० वर्षे पूर्ण होत आहे. गेली ५० वर्षे हा ‘जैन जागृति’चा दीप अखंड तेवत राहिला आहे आणि त्याचे श्रेय स्व. श्री. कांतिलालजी चोरडिया यांच्या पश्चात त्यांचे चिरंजीव संजयजी आणि स्नुषा सौ. सुनंदा यांनाच द्यावे लागते.

आजचे युग हे ‘डिजिटलायजेशन’चे युग आहे. तत्कालिन आठ पानांच्या टॅब्लाइड अंकाचे स्वरूप हे समाजजीवनाच्या बदलत्या काळानुसार आणि मागणीनुसार बदलत गेले आहे. मात्र, हे बदल अंगीकारताना संजयजीची व्यावहारिक आणि संपादकीय दृष्टी काळाच्या बरोबर तर आहेच; पण त्याही पुढे जाऊन विचार करायला लावणारी आहे. एक पितृवारसा त्यांना लेखणीच्या रूपाने मिळाला आणि त्यांनी तो जिद्दीने जपला, इतकेच नाही तर वाढवला. समाजजीवनाकडे आधुनिकते बरोबर व्यवहाराची जोड सामंजस्याने आणि संस्काराने पाहण्याची त्यांची वृत्ती त्यांच्या आजच्या यशस्वी कारकिर्दीला पोषक, पूरक ठरली आहे.

एखाद्या संस्थेची ५० वर्षांची वाटचाल ही त्या संस्थेचा वर्तमान, भूत आणि भविष्याचा वेध घेणारीच ठरत असते. भूतकाळाच्या खुणा त्यात अनेकविध

गोष्टींतून उमटलेल्या असतात, तर वर्तमानकाळातील नवनवीन घडामोडींचे पडसाद आणि त्यातील स्वीकारलेले आधुनिक बदल त्या संस्थाचालकाच्या कौशल्याची चुणूक दाखवतात; तर भविष्यात संस्थेच्या वाटचालीसाठी ते दिशादर्शकही ठरतात. संजय चोरडिया यांनी 'जैन जागृति'ची धुरा हाती घेतली तेव्हा असेच ठरले आहे. २५ वर्षे या मासिकाला होऊन गेली होती. एक रौप्यमहोत्सवी इतिहास अंकाच्या पाठीशी त्यांच्या वडिलांच्या कर्तृत्वाचा समोर होता आणि त्याचबरोबर वर्तमानकाळातील सोनेरी खुणा त्यांना खुणावत होत्या.

जानेवारी १९९९ मध्ये 'जैन जागृति' मासिकाच्या संपादकपदाची व प्रकाशनाची जबाबदारी त्यांच्याकडे आली. १४ नोव्हेंबर १९९३ रोजी संजयजींचे वडील- 'जैन जागृति'चे संस्थापक-संपादक- कांतिलालजी चोरडिया यांची एकसष्टी आणि अंकाचा रौप्यमहोत्सव दिमाखात साजरा झाला. मात्र, वडिलांबरोबर अंकासाठी काम करण्यास संजयजींनी लहानपणापासूनच सुरुवात केली होती. अंक छापून आला की त्या चार पानांच्या 'टॅब्लॉइड'ला 'पिन-अप' करून अंक सुस्थितीत करायचा आणि त्यानंतर तो वेळेतच पोष्टात नेऊन द्यायचा ही शिस्त वडिलांच्या कारकिर्दीतच त्यांना लागली आणि ती आजतागायत त्यांनी पाळली आहे. १ तारखेला अंक छापून तयार, ५ ला पोष्टात आणि १० तारखेला अंक वाचकांच्या हातात, हे समीकरण इतके घट्ट झाले आहे की त्यात खंड नाही. गेली ५० वर्षे अंक अखंडपणे, वेळेवर, ठरलेल्या तारखेच्या दिवशी वाचकांच्या हाती येण्याचे कारण संजयजींची शिस्त यात दिसून येते.

या कामात आता त्यांना संपादक म्हणून त्यांच्या पत्नी सौ. सुनंदा याही मदत करीत असतात. लेखाचे टायपिंग झाले की, त्याचे एडिटिंग, प्रुफरीडिंग करणे...

लेखात योग्य ते बदल करून त्यांची मांडणी करणे, अनुक्रम ठरवणे, या सगळ्या गोष्टी त्या स्वतः जातीने पाहतात, तर अंकाचे वैशिष्ट्य जपून ठेवणे आणि त्यात वेळोवेळी आधुनिकतेच्या दृष्टिकोनातून बदल करीत या अंकाचे अर्थकारण उत्तमरीत्या सांभाळण्याचे कौशल्य संजय चोरडिया यांचे आहे.

आजच्या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमाच्या युगात म्हणजे साधारण २०१० नंतर समाज माध्यमांचा (सोशल मीडिया) इतका सुळसुळाट झाला असताना प्रिंट मीडियावर त्याचे अनेक चांगले-वाईट परिणाम झाले आहेत. मात्र, 'जैन जागृति'ने आपले वैशिष्ट्य या काळातही सातत्याने टिकवून ठेवले आहे, इतकेच नव्हे तर त्यात कालानुरूप बदल करून अंक दिवसेंदिवस आकर्षक करण्यात संजय आणि सुनंदा चोरडिया यांना यश आले आहे. त्यांच्या या अंकाची ५० वर्षांची कारकीर्द याच गोष्टीची पावती देत आहे.

संस्थापक-संपादक कांतिलालजी चोरडिया

संजयजींचे वडील प्रोफेसर होते. अर्धमागधी आणि हिंदी अशा दोन विषयांत त्यांनी एम. ए. केले होते. शाळा-महाविद्यालयात शिकवत असतानाच विद्यार्थ्यांकडून हस्तलिखित अंकाचे प्रकल्प त्यांनी राबवले. त्यावेळी 'जैन धर्म दीपिका' हा पहिला अंक त्यांनी काढला. यात नवकार महामंत्र, आदिनाथ ऋषभदेव, चोवीस तीर्थंकर, प्रभू महावीर, जैन श्रावक, पर्वाधिराज पर्युषण, जैनांचे पवित्र दिवस, जैन धर्म आणि थोरांचे विचार... आदी विषय मांडले होते. या अंकाच्या २५०० प्रती काढल्या होत्या आणि किंमत होती चारअणे! हे अंक विकण्यातही त्यांनी त्यावेळी कौशल्य दाखवले होते. प्रभावना म्हणून काही अंक स्थानकात ठेवायचे. जास्तीत जास्त अंक घेणाऱ्याचे नाव अंकावर छापयचे अशा दृष्टिकोनातून अंकाची विक्री चांगली झाली होती.

कांतिलालजी चोरडिया हे एक उत्तम व्याख्याते होते, स्पष्टवक्तेपणा हा त्यांचा स्थायीभाव होता आणि

एका हातोटीच्या संपादकाकडे हे गुण असणे, हे अंकाच्या दृष्टीने फायद्याचेच होते. अर्धमागधी आणि हिंदी या दोन विषयात एम. ए. केलेले असल्याने जैन धर्माच्या आगमांचा आणि मूळ साहित्याचा अभ्यास त्यांनी सखोलपणे केला होता.

अनेक मासिकांतून त्यांनी लेखन केले; पण त्यावेळी त्यांच्या असे लक्षात आले की, जैनधर्माविषयाच्या साहित्याला किंवा लेखनाला कमी स्थान मिळते. महाराष्ट्रातील अनेक ग्रामीण भागातील जनता जैनधर्मशास्त्राबाबत, तत्त्वज्ञानाबाबत अनभिज्ञ आहे, त्यामुळे समाज जागृतीसाठी एखादे मासिक काढणे गरजेचे आहे, हे त्यांच्या लक्षात आले. १९६५ पासून त्या दृष्टीनेच विचार, वाचन आणि विभिन्न लोकांशी बोलणे सुरू झाले होते. मासिकासाठी समाजपोषक लेख देता येतील याची त्यांच्या एकूण अभ्यासवृत्तीनुसार त्यांना खात्रीही होती आणि त्याच दृष्टिकोनातून पावले टाकत त्यांनी १९६९ मध्ये नाना पेटेतील जैन स्थानकाजवळील जागा भाड्याने घेतली आणि लासलगाव येथील प्राध्यापकपदाचा राजीनामा देऊन 'जैन जागृती'च्या मासिकाच्या कामाची नीव रोवली.

कांतिलालजी चोरडिया यांची दूरदृष्टी इतकी चाणाक्ष होती की, त्यांनी आपल्या तिन्ही मुलांना म्हणजे आशा, प्रवीण आणि संजय यांना या अंकाच्या पुढील वाटचालीच्या दृष्टीने उपयुक्त होईल असेच शिक्षण त्यांना दिले. आशा या बी. ए. झाल्या. प्रवीण यांनी बी. कॉम. केले, तर संजय चोरडिया यांनी फर्ग्युसन महाविद्यालयातून बी. ए. ची पदवी घेतली आणि विशेष म्हणजे मराठी हा विषय घेऊनच त्यांनी आपले उच्च शिक्षण- एम. ए. पूर्ण केले.

संजय चोरडिया यांचे योगदान

आज एका महत्त्वाच्या ५० वर्षांचा इतिहास सांभाळणाऱ्या आणि त्या अंकाची यशस्वी वाटचाल वर्तमानात सुरू ठेवणाऱ्या संजयजींचे लौकिक मराठी

विषयातील शिक्षण आणि व्यावहारिक दृष्टिकोन त्यांच्या यशस्वी कारकिर्दीची ओळख ठरते आहेत.

कांतिलालजी हे उत्कृष्ट व्याख्याते होते, त्यानिमित्ताने महाराष्ट्रातील अनेक गावांत ते जात असत. 'जैन जागृती'साठी सभासद आणि जाहिरातदार जमा करण्यासाठी त्यांना या फिरण्याचा चांगला उपयोग झाला होता. पहिल्याच अंकासाठी प्रकाशनाआधीच ७०० ग्राहक त्यांना मिळाले होते आणि ११०० प्रति त्यांनी काढल्या होत्या.

१५ ऑगस्ट १९६९ मध्ये निघालेल्या पहिल्या अंकाचे स्वरूप डबल क्राऊन साईज आणि दर आठवड्याला ८ पाने, पाक्षिक स्वरूपात १६ पाने असे होते. त्यानंतर सहा महिन्यात अंकाचे स्वरूप बदलले आणि आता ते मासिकाच्या आकारात दिले जाऊ लागले, असे असले तरी आजचे अंकाचे स्वरूप पाहता फोर कलर डिझाइन, व्हाईट आणि आर्ट पेपरवर छापला जात असलेला मजकूर असे सुबक स्वरूप दिसून येत आहे. अंकाच्या सुबक कव्हरपासून आतील प्रत्येक पानाची मांडणी यात एक उत्कृष्ट वेगळेपण दिसून येते. अंक पूर्ण झाल्यावर तो ग्राहकापर्यंत पोहचण्यासाठी विशेष मेहनत घेतली जाते. प्लॅस्टिक कव्हरचा त्यासाठी वापर केला जात असला तरी ते प्लॅस्टिक सरकारी नियमानुसारच वापरले जाते. पाण्या-पावसात अंक भिजू नये, त्यांची घडी पडू नये यासाठी काळजी घेतली जाते. अंक जसा आहे तसा नव्या कोऱ्या स्वरूपातच ग्राहकांच्या हाती पडला पाहिजे, हा संजयजींचा अट्टहास असतो, त्यामुळेच आज पोष्टाने अंक येत असला तरी त्याची गुणग्राहकता जपली गेली आहे, हे सहज लक्षात येते.

या अंकाच्या प्रचारासाठी आणि प्रसारासाठी म्हणजेच अंक अधिकाधिक जैन बांधवांपर्यंत पोहोचवण्यासाठी आणि जाहिरातदार मिळवण्यासाठी गावोगावी फिरावे लागत होते. अर्थातच यासाठी मनुष्यबळाची गरज होती. हे ओळखूनच संजयजींनी

त्या दृष्टीने सुमारे ३५ प्रचारकांची नेमणूक पुण्यासह महाराष्ट्रात अनेक ठिकाणी केली आहे.

या अंकाची काही वैशिष्ट्ये ही सुरुवातीपासूनच जपली गेली आहेत आणि संजय चोरडिया यांनीही त्याचा पाठपुरावा केला आहे. अंकात काय असेल, याबाबत संपादकाच्या दृष्टिकोनातून त्यांनी विचार केला आहे आणि तो या 'जैन जागृति'साठी मोलाचा ठरत आहे.

'जैन जागृति'च्या सुरुवातीलाच भारतातील आणि प्रामुख्याने महाराष्ट्रातील जैनांच्या विविध संस्थांचा परिचय आणि त्यांच्या कार्याचा प्रचार करणे, प्राचीन-अर्वाचीन काळातील जैन महापुरुषांचा परिचय, जैनांतील सर्व संप्रदायांकडे समभावाने पाहून त्यांच्यात ऐक्य निर्माण व्हावे यासाठी प्रयत्न, व्यापाऱ्यांना उपयुक्त माहिती, जैन धर्माविषयी विपरीत प्रचार करणाऱ्यांचा विरोध आदी धोरणे आखण्यात आली होती. याबरोबरच कोणतीही व्यक्तिगत निंदा करणार नाही. मात्र जे लोक जैन धर्माची निंदा करतील किंवा चुकीचा प्रचार करतील त्यांच्या मतांचे खंडण करण्यात येईल, जैनांतील विविध संप्रदायांपैकी एका संप्रदायाचा पक्ष घेऊन अन्य संप्रदायांची निंदा करणार नाही, या बाबीही अंकाच्या पहिल्या दिवसापासून ठरवण्यात आल्या होत्या.

संजय चोरडिया यांनी आपल्या वडिलांनी-कांतिलालजी चोरडिया यांनी आखून दिलेली तत्त्वे आजही पाळली आहेत, पाळत आहेत. 'जैन जागृति'चे आजचे स्वरूप पाहिले तर आपल्या सहज लक्षात येते की, या अंकात वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक व्यक्तिमत्त्वांचे जीवनचरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या, पुरस्कार, सन्मान यांच्यासाठी विशेष स्थान... अशा अनेकविध विषयांनी या अंकाचे

स्वरूप बहरलेले असते.

'जैन जागृति'चे वर्षभर विशिष्ट वेळेला मिळणारे अंक हे ग्राहकांसाठी पर्वणी असते. या अंकाची वाट पाहणारे अनेक ग्राहक अंकाला मिळाले आहेत, हे अंकाचे विशेष आहे. वर्षातून तीन अंक विशेष कारणांसाठी काढले जातात. पर्युषण महापर्व, दिवाळी अंक आणि महावीर जन्मकल्याणक...! यातही दिवाळी आधी येणाऱ्या अंकाचे आणि दिवाळी अंकाचे एक वैशिष्ट्य आहे. या अंकांमध्ये जैन धर्माच्या संस्कारांप्रमाणे 'दीपावली पूजन विधी' दिलेला असतो. तीर्थकरांना वंदन करून मंगलविधीची सुरुवात, सरस्वती स्तवन, अष्टदोहे, मंगलपाठ आणि दीपावली पूजनाचे सर्व मुहूर्त दिले जातात, त्यामुळे तर दिवाळी सणाच्या वेळी पूजेच्या वेळी जैनधर्मीयांच्या पूजासाहित्या बरोबरच या अंकाचे अधिष्ठान खूप मोठे आहे. समोर अंक ठेवून पूजा करणारे अनेक जैनबांधव आज या अंकाचे धार्मिक मूल्य जाणून आहेत.

'जैन जागृति'च्या माध्यातून समाजातील अनेक व्यक्तींना 'लिहिते' करण्याचा प्रयत्न संजय चोरडिया यांनी केला आहे. त्यातून उत्कृष्ट लेखक-लेखिका तयार झाल्या आहेत. जैन समाजातील महिलांना लिहिण्यासाठी या मासिकाच्या माध्यमातून एक सुंदर व्यासपीठ मिळाले आहे आणि या मासिकात लिहिलेले त्यांचे लेख त्यांच्यासाठी एक वैशिष्ट्य ठरले आहे. हिंदी आणि मराठी अशा दोन्ही भाषांत या अंकातून लेख, वृत्त आणि इतर माहिती प्रकाशित होत असल्याने अंकाचे तेही एक वैशिष्ट्य ठरले आहे.

'जैन जागृति'ने अजून एक वैशिष्ट्य जपले आहे. या अंकात युवा पिढीसाठी एक वेगळे स्थान आहे. आजच नाही तर ही अंकाची परंपरा सुरुवातीपासूनच आहे.

करियर गाईडन्स लेख, विविध शिष्यवृत्तीची माहिती, अल्पसंख्य समाजाला मिळणाऱ्या सवलती, त्या संदर्भातले निवेदन, जितो व विविध शैक्षणिक

संस्थतर्फे चालवणारे उपक्रम यांची माहिती दिली जाते. अंकात अनेक पदवीधर मुला-मुलींच्या सन्मानाच्या बातम्या प्रसिद्ध होतात. पर्यायाने समाजात वधू-वरांची माहिती होते आणि 'जैन-जागृती'च्या माध्यमातून अनेक रेशीमगाठी बांधल्या गेल्या आहेत, जात आहेत. माध्यमाचा उपयोग समाजगठन एक करण्यासाठी अत्यंत चांगल्या पद्धतीने केला जात आहे. संजय चोरडिया यांनी या अंकातून सामाजिक बांधीलकी जपली असल्याचेच दिसून येते.

संजय चोरडिया यांच्या वडिलांचे सामाजिक कार्य सर्वश्रुत आहे. भारतीय जैनांची लोकसंख्या जनगणनेत स्पष्टपणे दिसावी यासाठी 'जैन जागृती'चे कार्य खूप मोठे आहे. १९७९ पासून सगळ्याच फॉर्ममध्ये 'जैन' असा वेगळा धर्म लिहिण्यासाठी अंकातील लेखांतून समाजप्रबोधन केले आहे आणि ते कार्य संजयजी आजही करीत आहेत. जनगणना प्रसंगी जैनांनी आपली नोंद 'जैन' म्हणूनच करावी, यासाठी आग्रही मांडणी केलेली आहे. कांतिलालजी व संजयजी चोरडिया यांनी तर यासाठी घरोघर जाऊन प्रबोधनाचे काम केले आहे. मंदिर, स्थानक या ठिकाणी तसे फलक लावून ही माहिती समाजापर्यंत पोहोचवली आहे आणि त्याचा अपेक्षित परिणामही दिसून आला तरी अजूनही त्यासाठी काम करणे आवश्यक आहे. अनेक ठिकाणी विशेषतः ग्रामीण भागात या जनगणनेच्या प्रक्रियेत 'जैन' असेच धर्माच्या कॉलममध्ये लिहिण्याबाबत आग्रही राहण्यासाठी प्रबोधनात्मक चळवळ उभी करून जागृती करण्याची गरज असल्याचे संजयजी बोलून दाखवतात आणि त्या दृष्टीने 'जैन जागृती'मधून काम करणार असल्याचेही ते सांगतात.

याबरोबरच अल्पसंख्याक हा दर्जा जैन समाजाला मिळावा यासाठी 'जैन जागृती'च्या माध्यमातून काम केले गेले आहे. १९९६ मध्ये या विषयांतर्गत पहिला लेख छापून आला. सातत्याने या

विषयाच्या बातम्या 'जैन जागृती' मध्ये देऊन या विषयाचा पाठपुरावा केला आहे. यावेळी हा दर्जा नको असे म्हणणारा एक गट, तर दर्जा हवा असे म्हणणारा एक गट होता. या गटाला या दर्जाचे महत्त्व समजून सांगण्याचे काम संजय चोरडिया यांच्या लेखणीने अंकातून केले आहे. २०१३ मध्ये जैन समाजाला अल्पसंख्य म्हणून घोषित करण्यात आले. आज समाजातील अनेक गरजू नागरिकांना सरकारच्या या योजनेचा लाभ मिळत आहे. शैक्षणिक क्षेत्रात, नोकरी मिळवण्यासाठी या योजना लक्ष्यवेधी ठरत आहेत.

जिद्द आणि नियमितपणाचा वारसा जपला

जिद्द आणि नियमितपणा हे कांतिलालजी चोरडिया यांचे स्थायीगुण होते, ते संजयजींनी बरोबर उचलले आहेत. अंकाच्या लेखांची जुळणी, जाहिरातदारांबरोबरचे सलोख्याचे संबंध, अंकाची मांडणी, प्रेसला अंक गेल्यावर त्याच्या पुढच्या प्रक्रिया आणि त्यानंतर अंक पोष्टात वेळेवर जाऊन ग्राहकांच्या हातात अंक नेमक्या तारखेला पोहोचणे हे कौशल्यगुण संजयजींनी सांभाळले आहेत, त्यामुळेच 'जैन जागृती'चे आजचे अस्तित्व हे त्रिकालबाधित दिसून येत आहे. व्यवहार कुशलता आणि धर्मश्रद्धा याबरोबरच आपल्या कामाशी असलेला प्रामाणिकपणा या त्री-सूत्रीवर संजयजींनी त्यांच्या वडिलांनी सुरू केलेल्या मासिकाला एक सुंदर वळण दिले आणि आज या अंकाची वाटचाल सुवणमहोत्सवाकडून 'हीरकमहोत्सवा'कडे सुरू झालेली आहे.

लौकिक आणि व्यावहारिक जीवन

संजय चोरडिया यांनी ३० जानेवारी १९९९ ला 'जैन जागृती'ची जबाबदारी खऱ्या अर्थाने स्वीकारली असली तरी लहानपणापासूनच या अंकाच्या प्रसिद्धीच्या सर्व प्रक्रिया त्यांनी पाहिल्या होत्या आणि त्या आत्मसातही केल्या होत्या. १९८६ ला त्यांनी फर्ग्युसन महाविद्यालयातून मराठी विषय घेऊन एम. ए.

केले आणि आपल्या अभ्यासाची तात्त्विक रूपाने व्यवसायाशी सांगड घातली. अंकाचे वर्गणीदार आणि जाहिरातदार वाढवण्यासाठी वडील असतानाच महाराष्ट्रात अनेक ठिकाणी दौरे करायलाही सुरुवात केली होती. मात्र, त्यामुळे 'जैन-जागृती' महाराष्ट्रात कुठे कुठे पोहोचला आहे आणि अजून कुठे कुठे नेता येईल, या दृष्टीने त्यांनी अभ्यास केला आणि तशी पावले उचलली.

आज ५० वर्षांनंतर मागे वळून पाहिल्यावर जाणवते की, महाराष्ट्रच नाही तर अनेक राज्यांत 'जैन-जागृती'ची ओळख जैनांचे आघाडीचे मासिक म्हणून होत आहे. जैन संस्कारांचा हे मासिक म्हणजे आरसा आहे. या मासिकाचे संपादक म्हणून समाजात एक वेगळे स्थान त्यांना प्राप्त झाले आहे. समाजाचा दृष्टिकोन त्यांच्याकडे पाहण्याचा खूप वेगळा, आदरयुक्त आहे. अनेक जैन संस्था, संघटनांवर त्यांनी काम केले आहे; पण या मासिकाच्या कामासाठी त्यांनी स्वतःला वाहून घेतले आहे आणि त्यासाठी त्यांनी स्वतःहून काही संघटनांच्या पदांचा राजीनामा दिला आहे. २००४ मध्ये ते क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद येथे सक्रीय झाले.

महावीर जन्मकल्याणक दिवशी सकाळी पुण्यात भव्य मिरवणूक निघते, मात्र त्यानंतर दुपारी दुचाकीवरून अहिंसा रॅली सुरू करण्यात त्यांचा पुढाकार होता. जवळजवळ सहा वर्षे हा रॅलीचा उपक्रम त्यांनी आणि त्यांच्या सहकाऱ्यांनी पुण्यात राबवला; पण त्यानंतर काही सरकारी कायदेशीर अडचणींमुळे ही रॅली बंद करावी लागली; पण त्यांनी सुरू केलेल्या या रॅलीला त्यावेळी जो प्रतिसाद मिळाला होता, तो उल्लेखनीय असाच होता.

जैन समाजावरील अन्यायाविरोधात त्यांनी लेखणीच्या माध्यमातून काम केले आहे. अनेक लेख लिहिले आहेत. गेले वीस वर्षांहून अधिक काळ त्यांचे हे कार्य सुरू आहे. आज पुणे-सातारा रस्त्याजवळील

ऋतुराज सोसायटीत राहत असताना तिथे देखील त्यांचा सहभाग तेथील सांस्कृतिक कार्यक्रमात असतो. ऋतुराज सोसायटी कार्यकारणी, नॉलेज कट्टा, नवकार मंत्र जाप, येथील जैन मंदिराच्या उभारणीत त्यांचा असलेला सहभाग ही सामाजिक बांधीलकीची काही उदाहरणे आहेत.

धर्मश्रद्धा हा चोरडिया कुटुंबाचा स्थायी भाव आहे, त्यामुळेच 'जैन जागृती'च्या माध्यमातून समाज घटकांशी एकरूप होत असताना संजयजी यांनी घराची जबाबदारी तितक्याच समर्थपणे पेलली आहे. आई-वडील ही त्यांची खरी दैवते आहेत. २०१० मध्ये त्यांच्या आईना इंदुमती बन्सिलाल चॅरिटेबल ट्रस्टतर्फे 'आदर्श माता' पुरस्कार मिळाला आहे. वडगाव शेरी येथे गौतमनिधी मार्फत 'गौतमालय' हा गृहप्रकल्प उभारण्यात आला. येथे जैन समाजातील आर्थिक दृष्ट्या दुर्बल परिवारासाठी फ्लॉट बांधण्यात आले त्यांच्या निवाऱ्याची सोय येथे केलेली अशी एकूण ३५ घरकुले असून पैकी एका घरकुलाची जबाबदारी वडील कांतीलालजी वआई चंचलबाई यांच्या नावाने संजयजी आणि त्यांचे बंधू प्रवीणजी यांनी घेतली आहे.

वडगाव शेरी येथे असलेल्या कोठारी ट्रस्टला संजय आणि प्रवीण चोरडिया यांनी आईच्या नावाने डायलिसिस मशीन दिलेले असून, आज त्याचा उपयोग अनेक गरीब आणि गरजू रुग्णांना होतो आहे.

संजयजी यांचा मित्रपरिवार या मासिकाच्या माध्यमातून खूप मोठा आहे; पण संध्याकाळपर्यंत अंकाच्या कामात स्वतःला गुंतवून ठेवून संध्याकाळी सहानंतरचा वेळ सामाजिक, सांस्कृतिक कामाला देतात. एक उत्कृष्ट यशस्वी संपादक, शिस्तप्रिय आणि नियोजनबद्ध काम करणारे व्यक्तिमत्त्व आणि समाजमन जाणणारे जैन धर्माचे ते एक महत्त्वाचे घटक बनले आहेत.

कांतिलाल चोरडिया आणि संजय चोरडिया यांना मिळालेले पुरस्कार

आजपर्यंत 'जैन जागृति'ला अनेक पुरस्कार मिळाले आहेत. मासिकाच्या उत्कृष्ट प्रकाशनासाठी पुणे मनपातर्फे कांतिलालजी चोरडिया यांचा १९९२ मध्ये सन्मान करण्यात आला होता. श्री आगमोद्धारक समितीतर्फे १९९३ मध्ये त्यांचा 'जैन विद्वान' म्हणून सत्कार करण्यात आला होता. याच वर्षी जैन कॉन्फरन्सद्वारा देखील त्यांचा सन्मान करण्यात आला होता. १९९६ मध्ये जैन एकता महामंडळ, मुंबई यांच्यातर्फे सन्मान करण्यात आला होता. याशिवाय देखील अरिहंत सेवा प्रतिष्ठान, जैन युवक संघटना, कालंद्री जैन संघ यांसह अनेक जैन संघटनां तर्फे कांतिलालजी चोरडिया यांचा सन्मान करण्यात आला आहे.

यानंतरच्या पुढच्या काळात भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिती, भारतीय जैन संघटना, मरूधर जैन ग्रूप - पुणे, श्री. कांताबेन शहा ट्रस्ट यांच्यातर्फे संजयजी चोरडिया यांचा 'जैन जागृति'च्या कार्यकर्तृत्वासाठी सन्मान करण्यात आला. असे सन्मान अनेक जैन मुनींकडून देखील आशीर्वाद रूपाने त्यांना मिळाले आहेत. २०१७ ला पुणे मनपाचा पुरस्कार महत्त्वाचा आहे. याबरोबरच 'गुरू आनंद कार्यक्षम पत्रकार पुरस्कार' संजय चोरडिया यांना मिळाला आहे. २०१८ ला 'बेस्ट जैन मासिक'चा पुरस्कार 'सूर्यदत्ता' या संस्थेकडून मिळाला आहे.

सुनंदा चोरडिया यांचे योगदान

संजयजींचे घर परंपरा आणि आधुनिकता जपणारे आहे. काळाची पावले त्यांच्या वडिलांनीही ओळखली होती आणि त्यांनाही त्याची जाणीव आहे. त्यामुळेच त्यांच्या पत्नी सौ. सुनंदा चोरडिया यांच्या कार्याचे वेगळेपण संजयजींच्या कार्यावर सहज ठसा उमटून जाते. सुनंदा चोरडिया या मूळच्या औरंगाबाद

येथील श्री. मांगीलालजी कटारिया यांच्या कन्या. औरंगाबाद येथेच त्यांचे बी. कॉम. शिक्षण पूर्ण झाले. 'जैन जागृति' हे मासिक औरंगाबादला त्यांच्या घरी देखील येत होते. महाविद्यालयात शिक्षण घेत असताना या मासिकाबद्दल एक आत्मियता त्यांच्याकडे होती. हे मासिक चालवणारे संस्थापक-संपादक कांतिलाल चोरडिया यांच्या मुलाशी म्हणजेच संजयजींशी त्यांचे लग्न ठरले तेव्हा ही घटना त्यांच्याबाबत खूपच अप्रूप वाटणारी होती. सौ. सुनंदा यांनी लग्नानंतर या अंकाच्या कामात स्वतःला झोकून दिले आहे. अंकातील लेखांचे एडिटिंग, प्रुफरीडिंग आदी जबाबदाऱ्या त्यांनी घेतल्या असून, त्या जवळजवळ पूर्ण वेळ या अंकाच्या कामासाठी देतात, हे विशेष आहे. आधुनिक तंत्रज्ञान शिकून घेण्याची त्यांची पद्धत शिक्षणाबद्दल त्यांना असलेली ओढ दाखवून देतात. आज अंकाच्या 'वेब'चे काम देखील त्या स्वतः करतात. अंक वेबला डाऊनलोड करणे, त्याबाबतच्या घडामोडींचे 'अप-डेट्स' देणे, इतकेच नाही तर अनेकप्रकारच्या ऑनलाइन सेवांचा योग्य पद्धतीने त्या वापर करित आहेत. १९८८ पासून त्या 'जैन जागृति'च्या कामात सक्रीय असल्या तरी १९९९ पासून त्या खऱ्या अर्थाने आपल्या पतीच्या संजय चोरडिया यांच्या खांद्याला खांदा लावून या अंकाचे काम करित आहेत. ऑफिसमधील काम त्यांच्याकडे आणि मार्केटिंगचे काम संजयजींकडे अशी जवळजवळ विभागणीच या कामाची त्या दृष्टीने झाली आहे.

सतत हसतमुख, संसाराच्या जबाबदाऱ्या सांभाळत असताना त्यांनी त्यांचे छंद देखील जोपासले आहेत. सकाळी फिरायला जाणे, मैत्रिणींबरोबर अथवा ऋतुराजमधील महिला ग्रुपला वेळ देणे, स्वतःला वेळ देणे या गोष्टी त्यांनी सांभाळल्या आहेत. हिंदी भाषेवर त्यांनी प्रभुत्व मिळवले आहे आणि त्या उत्कृष्ट वक्ता आहेत. जैन मुनिश्रींच्या चातुर्मास काळात

अनेकवेळा 'जैन जागृति' मासिकाचे प्रकाशन झाले आहे, यावेळी त्यांचे वक्तृत्व खरोखरच वाखाणण्याजोगे आहे. सभाधीटपणा आणि भाषेवरील प्रभुत्व या दोन्ही गोष्टी त्यांनी साध्य केल्या आहेत.

संजय आणि सुनंदा या दाम्पत्याला स्नेहा आणि सागर ही दोन मुलं. या दोन मुलांच्या करिअरबाबत त्यांनी खूप आधीपासून विचार करून ठेवला होता. मुलांच्या शिक्षणापासूनच त्यांनी विशेषत्वाने लक्ष दिले आहे. प्रसंगी कौटुंबिक अथवा सामाजिक कार्यक्रमांना न जाता मुलांच्या शिक्षणासाठी तो वेळ त्यांनी नियोजनबद्धरीतीने दिला आहे आणि आज त्याचेच फळ त्यांना मिळाले आहे.

संजयजी आणि सौ. सुनंदा यांची मुलगी स्नेहा हिने एम. बी. ए. केले असून, चेतन बाठिया हे त्यांचे पती आहेत. त्या पुण्यातच स्थायिक आहेत.

सागर चोरडिया - संजयजी आणि सुनंदा यांचे हे चिरंजीव. आयआयटी, पवई येथे त्यांचे बी. टेक. चे शिक्षण पूर्ण झाले. आयआयटी जेईई परीक्षेत भारतात ८२ व्या रँकवर येऊन आयआयटीला त्यांना मिळालेला प्रवेश हा संजय आणि सुनंदा या उभयतांच्या जीवनातील सर्वोच्च आनंदाचा क्षण होता; पण इतकेच नाही तर या शिक्षण संस्थेत शिक्षण घेत असताना सागरला मिळालेले 'प्रेसिडेंट गोल्ड मेडल' आणि त्यावेळी या उभयतांचे तिथे असणे ही एक मोठी पर्वणीच त्यांच्या आयुष्यातली आहे. सागर यांच्या लहानपणापासूनच सुनंदा यांनी केलेले त्यांच्या यशासाठीचे प्रयत्न हे उल्लेखनीय असेच आहेत. लहानपणापासूनच त्याची वक्तृत्वशैली विकसित करून घेण्यासाठी त्यांनी प्रयत्न केले आहेत. मुळातच सागर हे हुशार असल्याने त्यांनी ते अत्यंत कौशल्याने आत्मसात केले आहेत. जैन मुनींच्या समोर लहानपणी केलेले त्यांचे व्याख्यान यासाठी त्यांचे विशेष कौतुक समाजाकडून झाले आहे. हा वारसा त्यांना आईकडून मिळाला आहे. आज सागर आणि त्यांची पत्नी प्राचि

दोघेही उच्चशिक्षित आहेत. सौ. प्राचि या जयपुरच्या आहेत. दिल्ली आयआयटीमधून त्यांनी बी. टेक. केले आहे. गुगल आणि फेसबुक सारख्या नामांकित कंपन्यांमध्ये अमेरिकेत ते दोघेही कार्यरत आहेत; नंतर दोघांनीही स्टेनफोर्ड युनिव्हर्सिटी USA मधून MS पण केले आहे. पण तिथे गेल्यावर देखील दोघांनी जैन समाजाची तत्त्व आवर्जून सांभाळली आहेत. पर्युषण पर्वातील जैन धर्मीयांचे उपवास ते तिथे देखील करतात.

सुनंदा चोरडिया यांना आजपर्यंत अनेक पुरस्कारांनी सन्मानित केले आहे. २००२ मध्ये सत्ताविसा जैन महिला अधिवेशनाचे अध्यक्षपद त्यांच्याकडे होते. 'नारी से नारायणी' या विषयावर त्यांनी केलेले भाष्य उल्लेखनीय ठरले आहे. २००४ मध्ये स्वानंद भरारीचा पुरस्कार त्यांना मिळाला आहे. २००५ मध्ये वाघोलीच्या मूक-बधीर शाळेत प्रमुख अतिथी म्हणून त्यांना तेथील कार्यक्रमाला बोलावण्यात आले आहे. भारतीय जैन संघटनेतर्फे त्यांचा सन्मान झाला आहे. जैन कॉन्फरन्स कार्यकारिणीमध्ये त्या सक्रीय होत्या. ऋतुराज सोसायटीमधील 'एन्जॉय ग्रूप' हा तर त्यांची अस्मिता आहे. सौ. सुनंदा यांचा अजून एक विशेष गुण आहे आणि तो म्हणजे पर्युषण पर्व, महावीर जन्मकल्याणक अशा महत्त्वाच्या वेळी त्यांनी आकाशवाणीवरून १२ वेळेला व्याख्यान दिले आहे.

'जैन जागृति'चे काम करित असताना एडिटिंग आणि प्रुफरीडिंगच्या माध्यमातून अनेक धार्मिक लेखांचे वाचन होते आणि ते सात्विक भाव आपोआपच आपल्या वर्तनात येतात, त्यांचा एक 'ऑरो' आपल्या भोवती निर्माण होतो, हे आवर्जून सांगायला त्या विसरत नाहीत.

'जैन जागृति'चे संपादक असलेल्या संजय चोरडिया यांनी जैन समाजाचा एक घटक बनून चोरडिया या घराचाच नाही तर समाजाचा वारसा

जपला आहे. आजच्या काळात एखादे मासिक एखाद्या विशिष्ट समाजाचा घटक बनवून चालवणे हे अत्यंत जिकिरीचे काम आहे; पण संजयजींनी ते धनुष्य लिलया पेलले आहे, आणि त्यात उत्कृष्ट वाटचाल केली आहे. या निमित्ताने ते समाजाचे तर ऋण मानतातच; पण या अंकाचे घटक असलेले लेखक, जाहिरातदार आणि वर्गणीदार यांच्यासुद्धा ऋणात राहून काम करणे पसंत करतात.

‘जैन जागृती’चा हा सुवर्णमहोत्सवाचा काळ यापुढे ‘हीरकमहोत्सवा’कडे वाटचाल करणार आहे,

यात शंकाच नाही. संजय चोरडिया आणि सौ. सुनंदा चोरडिया यांनी कांतीलाल चोरडिया यांनी लावलेल्या वृक्षाचे वटवृक्षात रूपांतर केले आहे. हा या दोघांच्या जीवनसाफल्याचा क्षण आहे, कांतीलालजी चोरडिया यांनी ज्या विश्वासाने हा वारसा त्यांच्या ओंजळीत दिला, तो विश्वास आज त्यांनी सार्थ ठरवला आहे. ‘जैनत्व जगणं आणि तेच जैनत्व जीवनाचा एक घटक बनवणं’ हे या चोरडिया दाम्पत्याने ‘जैन जागृती’च्या माध्यमातून समाजाला दाखवून दिले आहे. ●

जैन जागृती मुळे मी दीक्षा घेण्यास प्रवृत्त झालो... मुनिश्री प्रभुरक्षित विजयजी म.सा.

२६ जून २००४ रोजी सकाळी ९ वाजता जैन जागृती ऑफीसमध्ये एक तरुण जैन मुनि पगल्या करण्यासाठी व आशिर्वाद देण्यासाठी आले व त्यांनी सांगितले....

मी प्रभुरक्षित विजयजी मुनि. जैन जागृती-सप्टेंबर ९१ च्या अंकात मी व्याख्यान वाचस्पती आचार्य श्री रामचंद्र सुरीश्वरजी म.सा. यांचे जीवन चरित्र वाचले. हे जीवन चरित्र वाचून माझी दीक्षा घेण्याची इच्छा जागृत झाली. जैन जागृती मासिकाच्या निमित्ताने मी १० जून १९९५ साली येवला येथे वर्धमान तपोनिधी आचार्य भगवंत श्री. विजय प्रभाकर सुरीश्वरजी म.सा. यांच्याकडे दीक्षा घेतली.

माझे संसारी नाव जगन्नाथ शरद मापारी. मी जन्माने जैन नाही. मी येवला येथे ट्यूशन घेत असे. येवला येथील नगरशेठ श्री. जयंतीलाल भोगीलाल पटणी यांच्या घरी मुलांची ट्यूशन घेण्यास जात होतो. तेथे जैन जागृती अंक नियमित येत होता. जैन जागृती अंकातील आचार्य श्री. रामचंद्र सुरीश्वरजी म.सा. यांचे जीवन चरित्र वाचले. त्यातून प्रेरणा घेऊन मी दीक्षा घेण्याचा निर्णय घेतला. जैन जागृती मुळे माझा आत्मा जागृत झाला. मी अनेक ठिकाणी प्रवचनात ही गोष्ट सांगतो. दीक्षेनंतर प्रथमच पुण्यात येण्याचा योग आला व आज मुद्दाम आपल्या घरी पगल्या करण्यासाठी आलो आहे. जैन जागृती मासिक असेच शासन प्रभावनाचे कार्य करित राहो ही शुभेच्छा.

